14 (HIN–2) 2026

2022

HINDI

Paper : HIN–2026

[Hindi Sāhitya Kā Itihās–II (Ritikal)]

[हिन्दी साहित्य का इतिहास–II (रीतिकाल)]

Full Marks : 64

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. सही विकल्प का चयन करके निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पुर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) व्याकरणिक दृष्टि से गत्यर्थक 'रीङ्' धातु के साथ किस प्रत्यय के योग से 'रीति' शब्द की निष्पत्ति होती है ?

(i) क्तीच्

(ii) क्तिस्

(iii) क्तिच्

(iv) क्तिच्छ्

(ख) उत्तर-मध्यकाल के लिए 'रीति-शृंगारकाल' नाम किस विद्वान ने दिया है ?

(i) डॉ० त्रिभुवन सिंह

(ii) डॉ० भगीरथ मिश्र

(iii) डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त

(iv) डॉ० बच्चन सिंह

(ग) हिन्दी के रीतिकवियों ने काव्यशास्त्रीय विवेचन हेतु संस्कृत-काव्यशास्त्र के कैसे आचार्यों के ग्रंथों को शास्त्रीय आधार-स्वरूप ग्रहण किया ?

(i) रस-परवर्ती आचार्य

(ii) अलंकार-परवर्ती आचार्य

(iii) रीति-परवर्ती आचार्य

(iv) ध्वनि-परवर्ती आचार्य

(घ) आदिकाल में हुए रीति-निरूपण के प्रयास के सन्दर्भ में शिवसिंह सेंगर द्वारा उल्लिखित पुष्य कवि-कृत 'अलंकार रलाकार' ग्रंथ का रचनाकाल बताया जाता है—

(i) 713 ई०

(ii) 723 ई०

(iii) 763 ई०

(iv) 793 ई०

(ङ) कौन-सा युग्म सही है ?

(i) चिंतामणि त्रिपाठी—काव्यमंजरी

(ii) कृष्णभट्टदेव ऋषि—शृंगाररसमाधुरी

(iii) तोष—रसपीयूषनिधि

(iv) सूरति मिश्र — काव्यविवेक

(च) "शृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है।"— प्रस्तुत कथन किस ओलोचक-विद्वान का है ?

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ii) डॉ० नगेन्द्र

(iii) डॉ० बच्चन सिंह

(iv) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

(छ) भिखारीदास की रचना नहीं है—

(i) काव्य-निर्णय

(ii) रससारांश

(iii) शृंगार मंजरी

(iv) छंदोर्णवपिंगल

(ज) 'इश्कनामा' की रचना किसने की है?

(i) घनानन्द

(ii) आलम

(iii) ठाकुर

(iv) बोधा

(झ) वीरकाव्य-प्रणेता सूदन किस राजा के आश्रित थे?

(i) विक्रमसाह

(ii) सुजानसिंह

(iii) प्रतापसिंह

(iv) रघुनाथराव

(ञ) असत्य कथन का चयन कीजिए —

(i) हिन्दी के रीति-आचार्यों ने भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा को हिन्दी में सरस रूप में अवतरित किया।

(ii) इन आचार्यों ने रस को ध्वनि के प्रभुत्व से मुक्त किया और पूरी दो शताब्दियों तक रसराज शृंगार की अविच्छिन्न धारा प्रवाहित की ।

(iii) इन आचार्यों ने व्यापक आधारभूत काव्यसिद्धांतों का प्रवर्त्तन किया।

(iv) संस्कृत आलोचना के साथ हिन्दी आलोचना की अखण्ड अंत:सुत्रता को पोषित करने में इन रीतिकार कवियों का स्पष्ट योगादान रहा।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×7=14

(क) आचार्य वामन-सम्मत 'रीति' की परिभाषा देते हुए उसके अर्थ का उल्लेख कीजिए।

(ख) छन्दोनिरूपक रीतिकवियों ने संस्कृत काव्यशास्त्र के किन दो प्रमुख आचार्यों का अनुकरण कर उनकी कौन-सी कृतियों को आधारस्वरूप ग्रहण किया?

(ग) 'अलंकृत काल' नामकरण में निहित अव्याप्ति दोष को स्पष्ट कीजिए।

(घ) "अमी हलाहल मद भरे, सेत स्याम रंतनार।
जियत मरत झुकि-झुकि परत, जिहि चितवत एक बार।।"
—प्रस्तुत दोहा किसके द्वारा रचित है ? वे विशिष्टांग-निरूपक कवियों के शिस वर्ग में आते हैं?

(ङ) कविवर बिहारीलाल की कोई दो प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

(च) किस राजा ने कवि भुषण को 'भुषण' की उपाधि से सम्मानित किया था? कवि भुषण-विरचित किसी एक अलंकार-निरूपक ग्रंथ का नामोल्लेख कीजिए।

(छ) रीतिमुक्त काव्यधारा की *किन्हीं दो* विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं दो*** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×2=10

(क) रीतिकालीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति पर प्रकाश डालिए।

(ख) रीतिकाल के सीमांकन की समस्या पर विचार कीजिए।

(ग) सर्वांग-निरूपक रीतिकवि के रूप में कविवर देव का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(घ) रीतिकालीन नीतिकाव्य के महत्व का आकलन कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं तीन*** के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) हिन्दी साहित्येतिहास के उत्तर-मध्यकाल की 'शृंगारकाल' कहना अधिक उपयुक्त है या 'रीतिकाल' ? सतर्क उत्तर दीजिए।

(ख) रीतिकाव्य का आशय स्पष्ट करते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

(ग) "इसमें संदेह नहीं कि काव्यरीति का सम्यक् समावेश पहले-पहल आचार्य केशव ने ही किया। पर हिन्दी में रीतिग्रंथों की अविरल और अखंडित परम्परा का प्रवाह केशव की 'कविप्रिया' के प्राय: पचास वर्ष पीछे चला और वह भी एक भिन्न आदर्श को लेकर, केशव के आदर्श को लेकर नहीं।"— प्रस्तुत कथन किस समीक्षक का है ? उक्त कथन के आलोक में रीतिकाल के प्रवर्त्तक-सम्बन्धी विवाद पर विचार प्रकट कीजिए।

(घ) रीतिमुक्त काव्यधारा (रीतिकालीन स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा) की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इस काव्यधारा को कविवर घनानन्द की देन का सटीक मूल्यांकन कीजिए।

(घ) रीतिकालीन भक्तिकाव्य (चारों उपशाखाओं-समेत) के प्रमुख कवियों का उल्लेख करते हुए इस काव्यधारा की मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

(ङ) रीतिकाल की भाषा-शैलीगत उपलब्धियों पर सोदाहरण आलोकपात कीजिए।